नृत्य ओडिशी –कोड 059
अंकन योजना
कक्षा -XII (2025 -26)

समय – 2 घंटे **अधिकतम अंक – 30**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 16 प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प शामिल हैं।
- **खंड- क** में 8 प्रश्न बहुविकल्पीय हैं, जिनमें प्रत्येक 1 अंक का है।
- **खंड- ख** में 5 प्रश्न छोटे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 2 अंक का है।
- **खंड- ग** में 3 प्रश्न लंबे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 6 अंक का है।

प्रश्न	खंड-क	अंक
1.	B	1
2.	C	1
3.	A	1
4.	C	1
5.	C	1
6.	B	1
7.	D	1
8.	B	1
	खंड-ख	
9.	**रूपक ताल** रूपक ताल - 6 मात्राएँ, विभाग - 2, छंद 2+4 धै-1, कड़टक-2, धै-3, कड़टक-4, तिन-5, दा-6 **अथवा** **झम्पा ताल** - 10 मात्राएँ, विभाग - 4, छंद 2+3+2+3 धाती-1, नाम-2, धा-3, धाती-4, नाम-5, ताती-6, नाम-7, ता-8, ताती-9, नाम-10	2
10.	**तांडव नृत्य** भगवान शिव द्वारा किया गया नृत्य तांडव कहलाता है, जो उनके विनाशकारी स्वभाव को प्रदर्शित करता है, जो ब्रह्मांड के विनाश के रूप में व्यक्त होता है। तांडव नृत्य आक्रामक, तीव्र, शक्तिशाली और तेज़ गतियों से प्रदर्शित किया जाता है। तांडव नृत्य को खुशी के साथ भी प्रस्तुत किया जाता है। **अथवा** ओडिशी में पल्लवी एक शुद्ध नृत्य है जो किसी विशेष राग के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। नृत्य की शालीन और लयबद्ध गतियाँ मर्दल के जटिल	2

	लय पैटर्न पर आधारित होती हैं, जिसमें राग के संगीत नोट्स के साथ नृत्त किया जाता है।	
11.	**लय** ताल की गति को लय कहते हैं। तीन प्रकार की लय होती हैं: • विलंबित लय • मध्य लय • द्रुत लय **अथवा** रस वह मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्थिति है जिसमें आनंद की भावना उत्पन्न होती है। यह संवेदनाएँ और भावनाएँ व्यक्ति में सौंदर्यपूर्ण अनुभव का निर्माण करती हैं। तीन रस हैं: वीर, अद्भुत और भयानक।	2
12.	**लोकधर्मी** लोकधर्मी का अर्थ है जीवन से संबंधित और वास्तविक प्रदर्शन, जो प्राकृतिक अभिव्यक्तियों और गतियों को दिखाता है। लोकधर्मी नृत्य में दैनिक जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ और मुद्राएँ शामिल होती हैं। **अथवा** नृत्त का अर्थ है शुद्ध नृत्य। यह शरीर की संपूर्ण लयबद्ध गति के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जो ताल, पाँव की गति और हाथ की मुद्राओं पर आधारित होती है, बिना किसी विशेष कहानी को अभिव्यक्ति किए।	2
13.	**ओडिशा के लोक नृत्य** रंगवती, केला केलुनी, दंड नाच, घुड़ा नाच, पायिक नाच, पात्र सौरा नाच, दासकाठिया (किसी भी चार) **अथवा** छऊ नृत्य के संगीत वाद्य यंत्र: तुरही, महुरी, ढोल, नगाड़ा (धुमसा), चडचडी	2
	खंड-ग **(दिए गए विकल्पों में से <u>कोई दो</u> प्रश्न हल करें)**	
14.	**जयदेव** जयदेव एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि थे, जो 12वीं शताबदी में थे। वे अपनी महाकाव्य काव्य रचनाओं में से एक **"गीत गोविंद"** के लिए प्रसिद्ध हैं, जो भगवान कृष्ण और गोपिका राधा के दिव्य प्रेम को दर्शाता है, जो शारीरिक पहलुओं से परे जाकर आध्यात्मिक एकता की ओर बढ़ता है। **गीत गोविंद** एक अमर साहित्यिक कृति है, जिसने भारत को अपनी समृद्ध भक्ति रचनाओं के साथ सदियों तक पोषित किया है। गीत गोविंद के श्लोक आमतौर पर आठ होते हैं, और इन्हें **अष्टपदी** के	6

	नाम से भी जाना जाता है। अष्टपदी एक अद्वितीय रचनाएँ हैं जिनमें कवि जयदेव ने प्रत्येक अष्टपदी के लिए विशेष रूप से ताल और राग का निर्धारण किया है। गीत गोविंद की अष्टपदी रचनाएँ भारतीय शास्त्रीय नृत्य के सभी रूपों में **अभिनय** रचनाओं के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं।	
15.	**गुरु देब प्रसाद दास** गुरु देब प्रसाद दास का जन्म 1932 में उड़ीसा के कटक में हुआ था। जब वे छोटे थे, तब उनकी माँ का निधन हो गया, और इस कारण उन्हें उनके वायलिन वादक दादा और पुलिस अधिकारी पिता ने पाला। वे अपनी प्रारंभिक शिक्षा के दौरान पुरी में रहते थे, जहाँ उन्होंने 6 वर्ष की आयु से संगीत और नृत्य की शिक्षा लेना शुरू किया। वे मोहन चंद्र महापात्र द्वारा चलाए जा रहे एक स्थानीय स्कूल में नृत्य और संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। हालांकि, उनके पिता की नौकरी के स्थानांतरण के कारण वे जल्द ही बेहरामपुर चले गए। 14 वर्ष की आयु में उन्हें **राधा रमन राय संगीत विद्यालय** में भेजा गया, जो न्यू थिएटर्स के संगीत निर्माण में सहयोग करता था। 1964 में उन्होंने उड़ीसा के **उत्कल संगीत महाविद्यालय** में ओडिसी नृत्य के अध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला। उन्होंने ओडिया भाषा में **"नृत्यनुसारणी"** नामक पुस्तक लिखी, जो ओडिसी नृत्य पर एक ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुई। 16 जुलाई 1986 को मात्र 54 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। फिर भी, उनके योगदान ने ओडिसी नृत्य रूप को परिभाषित किया। उनके ओडिसी नृत्य की शैली का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि उन्होंने अपने **मंगलाचरण** में **शब्द स्वर पाट** के सिद्धांतों का प्रयोग किया। उनके सबसे प्रसिद्ध नृत्य रचनाएँ हैं **अष्टशंभू**, **नवरस** और **स्थाई नृत्य** आदि। उन्होंने 1977 में **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार** और 1974 में **उड़ीसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार** प्राप्त किया।	6
16.	**ओडिसी आहार्य** ओडिसी आहार्य अन्य शास्त्रीय नृत्यों से अद्वितीय है क्योंकि इसमें शरीर के विभिन्न हिस्सों में चांदी या सफेद धातु के आभूषण पहनने का प्रचलन है। ओडिशा की बुनाई की हुई रेशमी साड़ी **धोती शैली** में या सिलाई किए हुए परिधान के रूप में पहनी जाती है। आभूषणों में **बलया** और **तायित** हाथ में पहने जाते हैं। **मुदी** अंगुली में पहना जाता है। **बेंगपाटिया (कमरबंद)** कमर में पहना जाता है। **हार** और **माला** गले में पहने जाते हैं। **काप** या **कुंडल** कानों में पहना जाता है। **मथामणि** या **केतकीभरणा** माथे पर पहना जाता है। बालों को बीच में दो हिस्सों में बांटा जाता है और बालों का गुच्छा **पुष्पचूड़ा** से सजाया जाता है। **टाहिया** सिर के ऊपर पहना जाता है। **मथा कंटा** बालों के गुच्छे के पीछे की ओर पहना जाता है। पैरों और हाथों को **अलता** से सजाया जाता है। दोनों पैरों में **नुपुर** और **घुंघरू** पहने जाते हैं।	6